Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
January-June 2022 3(1), 650–652

NARI SHAKTI: FOUNDATION OF DEVELOPED INDIA

नारी शक्ति: विकसित भारत की नींव

Dr. Dipika Sharma [1]

[1] Assistant Professor, University of Delhi

ABSTRACT

English: The status of women in India has undergone many major changes in the last few centuries. From equal status with men in ancient times to the low standard of living in the medieval period as well as the promotion of equal rights by many reformers, the history of women in India has been quite dynamic. In modern India, women have occupied top positions such as President, Prime Minister, Speaker of Lok Sabha, Leader of Opposition etc. Literary sources that specifically discuss the role of women are very few; an important exception is the Stridharmapaddhati of Tryambakayajvan, an official of Thanjavur around 1730 AD. This book compiles the rules of conduct for women from the ancient period of Apastamba Sutra (4th century BC). Its main verse is as follows: Mukhno Dharma: Smritishu Vihito Bhartrushushrusanam Hi: The main duty of a woman is related to the service of her husband. Where the word Suśruṣa (lit., "desire to hear") has a variety of meanings ranging from a devotee's prayer to God to the loyal service of a slave.

Hindi: भारत में महिलाओं की स्थिति ने पिछली कुछ सदियों में कई बड़े बदलावों का सामना किया है। प्राचीन काल में पुरुषों के साथ बराबरी की स्थिति से लेकर मध्ययुगीन काल के निम्न स्तरीय जीवन और साथ ही कई सुधारकों द्वारा समान अधिकारों को बढ़ावा दिए जाने तक, भारत में महिलाओं का इतिहास काफी गतिशील रहा है। आधुनिक भारत में महिलाएं राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, लोक सभा अध्यक्ष, प्रतिपक्ष की नेता आदि जैसे शीर्ष पदों पर आसीन हुई हैं।
विशेष रूप से महिलाओं की भूमिका की चर्चा करने वाले साहित्य के स्रोत बहुत ही कम हैं; 1730 ई. के आसपास तंजावुर के एक अधिकारी त्र्यम्बकयज्वन का स्त्रीधर्मपद्धति इसका एक महत्वपूर्ण अपवाद है। इस पुस्तक में प्राचीन काल के अपस्तंभ सूत्र (चौथी शताब्दी ई.पू.) के काल के नारी सुलभ आचरण संबंधी नियमों को संकलित काल के नारी सुलभ आचरण संबंधी नियमों को संकलित किया गया है। इसका मुखड़ा छंद इस प्रकार है।
मुख्यो धर्मः स्मृतिषु विहितो भार्तृशुश्रुषानम हिः स्त्री का मुख्य कर्तव्य उसके पति की सेवा से जुडा हुआ है।
जहाँ सुश्रूषा शब्द (अर्थात, "सुनने की चाह") में ईश्वर के प्रति भक्त की प्रार्थना से लेकर एक दास की निष्ठापूर्ण सेवा तक कई तरह के अर्थ समाहित हैं।

Corresponding Author
Dr. Dipika Sharma,
dr.dipika1982@gmail.com

DOI
10.29121/shodhkosh.v3.i1.2022.2758

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2022 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

1. प्रस्तावना

विद्वानों का मानना है कि प्राचीन भारत में महिलाओं को जीवन के सभी क्षेत्रों में पुरुषों के साथ बराबरी का दर्जा हासिल था। हालांकि कुछ अन्य विद्वानों का नज़रिया इसके विपरीत है। पतंजलि और कात्यायन जैसे प्राचीन भारतीय व्याकरणविदों का कहना है कि प्रारम्भिक वैदिक काल में महिलाओं को शिक्षा दी जाती थी। ऋग्वेदिक ऋचाएं यह बताती हैं कि महिलाओं की शादी एक परिपक्व उम्र में होती थी और संभवतः उन्हें अपना पति चुनने की भी आजादी थी। ऋग्वेद और उपनिषद जैसे ग्रंथ कई महिला साध्वियों और संतों के बारे में बताते हैं जिनमें गार्गी और मैत्रेयी के नाम उल्लेखनीय हैं।

प्राचीन भारत के कुछ साम्राज्यों में नगरवधु ("नगर की दुल्हन") जैसी परंपराएं मौजूद थीं। महिलाओं में नगरवधु के प्रतिष्ठित सम्मान के लिये प्रतियोगिता होती थी।

नारी शक्ति भारत की तरक्की की नींव है। नारी की भूमिका समाज में महत्वपूर्ण है, और उनका सशक्तिकरण विकसित भारत के निर्माण में आवश्यक है। इस लेख में हम नारी शक्ति के महत्व, नारी की भूमिका विकसित भारत में, नारी के अधिकार और सशक्तिकरण, और नारी की चुनौतियों और समाधानों पर चर्चा करेंगे।

नारी शक्ति का महत्व:

नारी शक्ति समाज की आधारशिला है। नारी की भूमिका परिवार, समाज और राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण है। नारी के सशक्तिकरण से समाज में सकारात्मक परिवर्तन आते हैं।

नारी की भूमिका विकसित भारत में:

नारी की भूमिका विकसित भारत में महत्वपूर्ण है। नारी के सशक्तिकरण से आर्थिक विकास, सामाजिक न्याय और राजनीतिक सशक्तिकरण में वृद्धि होती है।नारी के अधिकार और सशक्तिकरण:

नारी के अधिकार और सशक्तिकरण के लिए कई कदम उठाए गए हैं। महिला सशक्तिकरण के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक अवसरों की आवश्यकता है।

नारी की चुनौतियाँ और समाधान:

नारी की चुनौतियों में लिंग भेदभाव, घरेलू हिंसा, और आर्थिक असमानता शामिल हैं। इन चुनौतियों के समाधान के लिए समाज में जागरूकता और सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता है।1महिला सशक्तिकरण के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक अवसरों की आवश्यकता है।, समाज में जागरूकता और सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता है। नारी के अधिकारों की रक्षा करनी होगी।

नारी के सशक्तिकरण के लिए काम करना होगा।

इन सिफारिशों को लागू करके हम नारी शक्ति को विकसित भारत की नींव बना सकते हैं।

कुल मिलाकर, नारी शक्ति विकसित भारत की नींव है, और उनका सशक्तिकरण हमारे देश के विकास के लिए आवश्यक है।प्रतिष्ठित सम्मान के लिये प्रतियोगिता होती थी। आम्रपाली नगरवधु का सबसे प्रसिद्ध उदाहरण रही है।

अध्ययनों के अनुसार प्रारंभिक वैदिक काल में महिलाओं को बराबरी का दर्जा और अधिकार मिलता था।हालांकि बाद में (लगभग 500 ईसा पूर्व में) स्मृतियों (विशेषकर मनुस्मृति) के साथ महिलाओं की स्थिति में गिरावट आनी शुरु हो गयी और बाबर एवं मुगल साम्राज्य के इस्लामी आक्रमण के साथ और इसके बाद ईसाइयत ने महिलाओं की आजादी और अधिकारों को सीमित कर दिया।

हालांकि जैन धर्म जैसे सुधारवादी आंदोलनों में महिलाओं को धार्मिक अनुष्ठानों में शामिल होने की अनुमति दी गयी है, भारत में महिलाओं को कमोबेश दासता और बंदिशों का ही सामना करना पड़ा है। माना जाता है कि बाल विवाह की प्रथा छठी शताब्दी के आसपास शुरु हुई थी[

2. मध्ययुगीन काल

समाज में भारतीय महिलाओं की स्थिति में मध्ययुगीन काल के दौरान और अधिक गिरावट आयी [4] [7] जब भारत के कुछ समुदायों में सती प्रथा, बाल विवाह और विधवा पुनर्विवाह पर रोक, सामाजिक जिंदगी का एक हिस्सा बन गयी थी। भारतीय उपमहाद्वीप में मुसलमानों की

गयी थी। भारतीय उपमहाद्वीप में मुसलमानों की जीत ने परदा प्रथा को भारतीय समाज में ला दिया। राजस्थान के राजपूतों में जौहर की प्रथा थी। भारत के कुछ हिस्सों में देवदासियां या मंदिर की महिलाओं को यौन शोषण का शिकार होना पड़ा था। बहुविवाह की प्रथा हिन्दू क्षत्रिय शासकों में व्यापक रूप से प्रचलित थी। [14] कई मुस्लिम परिवारों में महिलाओं को जनाना क्षेत्रों तक ही सीमित रखा गया था । इन परिस्थितियों के बावजूद भी कुछ महिलाओं ने राजनीति, साहित्य, शिक्षा और धर्म के क्षेत्रों में सफलता हासिल की। [4] रज़िया सुल्तान दिल्ली पर शासन करने वाली एकमात्र महिला सम्राज्ञी बनीं। गोंड की महारानी दुर्गावती ने 1564 में मुगल सम्राट अकबर के सेनापति आसफ़ खान से लड़कर अपनी जान गंवाने से पहले पंद्रह वर्षों तक शासन किया था। चांद बीबी ने 1590 के दशक में अकबर की शक्तिशाली मुगल सेना के खिलाफ़ अहमदनगर की रक्षा की। जहांगीर की पत्नी नूरजहाँ ने राजशाही शक्ति का प्रभावशाली ढंग से इस्तेमाल किया और मुगल राजगद्दी के पीछे वास्तविक शक्ति के रूप में पहचान हासिल की। मुगल राजकुमारी जहाँआरा और जेबुन्निसा सुप्रसिद्ध कवियित्रियाँ थीं और उन्होंने सत्तारूढ़ प्रशासन को भी प्रभावित किया। शिवाजी की माँ जीजाबाई को एक योद्धा और एक प्रशासक के रूप में उनकी क्षमता के कारण क्वीन रीजेंट के रूप में पदस्थापित किया गया था। दक्षिण भारत में कई महिलाओं ने गाँवों, शहरों और जिलों पर शासन किया और सामाजिक एवं धार्मिक संस्थानों की शुरुआत की। और सामाजिक एवं धार्मिक संस्थानों की शुरुआत की।

भक्ति आंदोलन ने महिलाओं की बेहतर स्थिति को वापस हासिल करने की कोशिश की और प्रभुत्व के स्वरूपों पर सवाल उठाया। एक महिला संत-कवयित्री मीराबाई भक्ति आंदोलन के सबसे महत्वपूर्ण चेहरों में से एक थीं। इस अवधि की कुछ अन्य संत-कवयित्रियों में अक्का महादेवी, रामी जानाबाई और लाल देद शामिल हैं। हिंदुत्व के अंदर महानुभाव समुदाय, वरकारी और कई अन्य जैसे भक्ति संप्रदाय, हिंदू में पुरुषों और महिलाओं के बीच सामाजिक न्याय और समानता की खुले तौर पर वकालत करने वाले प्रमुख आंदोलन थे।

भक्ति आंदोलन के कुछ ही समय बाद सिक्खों के पहले गुरु, गुरु नानक ने भी पुरुषों और महिलाओं के बीच समानता के संदेश को प्रचारित किया। उन्होंने महिलाओं को धार्मिक संस्थानों का नेतृत्व करने; सामूहिक प्रार्थना के रूप में गाये जाने वाले वाले कीर्तन या भजन को गाने और इनकी अगुआई करने; धार्मिक प्रबंधन समितियों के सदस्य बनने; युद्ध के मैदान में सेना का नेतृत्व करने; विवाह में बराबरी का हक और अमृत (दीक्षा) में समानता की अनुमति देने की वकालत की। अन्य सिख गुरुओं ने भी महिलाओं के प्रति भेदभाव के खिलाफ उपदेश दिए।1992-93 के आंकड़ों के मुताबिक भारत में केवल 9.2% घरों में ही महिलाएं मुखिया की भूमिका में हैं। हालांकि गरीबी की रेखा से नीचे के परिवारों में लगभग 35% को महिला-मुखिया द्वारा संचालित पाया गया है।[

प्राचीन भारत के कुछ साम्राज्यों में *नगरवधु* ("नगर की दुल्हन") जैसी परंपराएं मौजूद थीं। महिलाओं में *नगरवधु* के प्रतिष्ठित सम्मान के लिये प्रतियोगिता होती थी। आम्रपाली नगरवधु का सबसे प्रसिद्ध उदाहरण रही है।

अध्ययनों के अनुसार प्रारंभिक वैदिक काल में महिलाओं को बराबरी का दर्जा और अधिकार मिलता था। हालांकि बाद में (लगभग 500 ईसा पूर्व में) स्मृतियों (विशेषकर मनुस्मृति) के साथ महिलाओं की स्थिति में गिरावट आनी शुरु हो गयी और बाबर एवं मुगल साम्रज्य के इस्लामी आक्रमण के साथ और इसके बाद ईसाइयत ने महिलाओं की आजादी और अधिकारों को सीमित कर दिया।

हालांकि जैन धर्म जैसे सुधारवादी आंदोलनों में महिलाओं को धार्मिक अनुष्ठानों में शामिल होने की अनुमति दी गयी है, भारत में महिलाओं को कमोबेश दासता और बंदिशों का ही सामना करना पड़ा है। माना जाता है कि बाल विवाह की प्रथा छठी शताब्दी के आसपास शुरु हुई थी।

3. निष्कर्ष

नारी शक्ति विकसित भारत की नींव है। नारी की भूमिका समाज में महत्वपूर्ण है, और उनका सशक्तिकरण विकसित भारत के निर्माण में आवश्यक है। हमें नारी के अधिकारों की रक्षा करनी होगी और उनके सशक्तिकरण के लिए काम करना होगा.

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

- 1984: On 23 May, Bachendri Pal became the first Indian woman to climb Mount Everest.
- 1989: Justice M. Fatima Beevi became the first woman judge of the Supreme Court of India.
- 1997: Kalpana Chawla became the first Indian-born woman to go to space.
- 1992: Priya Jhingan became the first woman cadet to join the Indian Army (she was commissioned on 6 March 1993)[32]
- 1994: Harita Kaur Deol became the first Indian woman pilot to fly solo in the Indian Air Force.
- 2000: Karnam Malleswari became the first Indian woman to win an Olympic medal (bronze medal at the 2000 Summer Olympics in Sydney).
- 2002: Lakshmi Sahgal became the first Indian woman to stand for the Indian President.
- 2004: Punita Arora became the first Indian woman to reach the highest rank of Lieutenant General in the Indian Army.
- 2007: Pratibha Patil became the first Indian woman President of India
- 2009: Meira Kumar became the first woman Speaker of the Lok Sabha, the lower house of the Indian Parliament.